IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882
INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भारत की सामाजिक–आर्थिक संरचना पर किसान आन्दोलन का प्रभाव

डा. शिवराम सिंह

असिस्टेंट प्रोफेसर समाज"ाास्त्र विभाग

डी. एस. एम. डिग्री कॉलेज कॉठ मुरादाबाद

सार

ऐतिहासिक तौर से भारत एक कृशि निर्भर अर्थव्यवस्था रही है जिसमें बदलाव भी आते रहे है। 19वीं और 20वीं भाताब्दी में औद्योगीकरण ने कृशि क्षेत्र में महत्वपूर्ण बदलाव किये। कृशि ने अपना पहले वाला महत्व खो दिया और अब केवल सीमांत क्षेत्र बन गयी। कुल राश्ट्रीय आय में इसका ज्यादा योगदान नहीं है। दूसरा महत्वपूर्ण परिवर्तन इसके आंतरिक सामाजिक संगठन में हुआ जो कृशि के म"ाीनीकरण और आधुनिकीकरण से संभव हो पाया। परिणामस्वरुप उत्पादन के सामाजिक सम्बन्धों में भी बदलाव आया अर्थात पूँजीवादी सम्बन्धों का विकास हुआ। जनसंख्या के विभिन्न वर्गों के बीच सम्बन्ध औपचारिक बन गये जिनमें निश्ठा का कोई स्थान नहीं रह गया। किसानी का व्यवसाय कोई वाणिज्यिक गतिविधि नहीं है बल्कि मानवता की सेवा के लिए अपनाया गया पे"ाा है। भारत के सन्दर्भ में यह और भी अधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि इसकी हजारों साल पुरानी संस्कृति में कृशि को 'उत्तम' व्यवसाय कहा गया है।

परिचय

कृशक आंदोलनों का मूल आधार वर्ग संघर्श की अवधारणा रही है, किन्तु कार्ल मार्क्स ने तो कृशक वर्ग को एक निश्क्रिय वर्ग माना था जबकि माओत्से तुंग ने इन्हें क्रान्ति का केन्द्र माना। विनोबा भावे एवं जय प्रका"ा नारायण के भूदान एवं सर्वोदय आंदोलनों का केन्द्र भी कृशक समुदाय ही रहा है। कृशक आन्दोलन मूलतः तब ही घटित होते है जब किसानों तथा कृशि कार्यो के मध्य कोई असामंजस्य की स्थिति उत्पन्न हो जाय।

भारतीय समाज में कृशक आन्दोलन के निम्नलिखित छः आधार रहे–

1– खेती से सम्बन्धित वस्तुओं के दाम बढ़ने

2– फसल नश्ट हो जाने

3– किसी वि"ोश फसल की खेती जबरदस्ती करवाई जाय

4– भूस्वामियों एवं बिचौलियों द्वारा किया जाने वाला भोशण

5– कृशि व्यवसाय से जुड़े अधिकारियों की नीतियाँ

6– बंधुआ मजदूरी करने पर विव"ा करना

समाजिक आन्दोलन सामाजिक प्रक्रियाएँ है और सामाजिक प्रगति का ही एक भाग है। इन्हें आमतौर पर निरन्तर संगठित या सामूहिक प्रयासों के रुप में माना जाता है, जिसका मुख्य उद्दे"य समाज की मुख्य संस्थाओं में परिवर्तन या सामाजिक प्रबन्धों में किसी प्रकार के परिवर्तन का विरोध करना है।(हरबर्ट ब्लूमर, 1951) आन्दोलन की उत्पत्ति विद्यमान सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक प्रबन्धों के विरुद्ध सामूहिक असंतोश की अभिव्यक्ति के रुप में होती है। सभी प्रकार के आन्दोलनों में विचारधारा, संगठन, उद्दे"य और नेतृत्व जैसे घटक अपनी–अपनी भिन्न भूमिका निभाते है।

कृशक आन्दोलनों को सामाजिक आन्दालन का ही एक प्रकार माना जाता है और उत्पादन के संगठनों में परिवर्तन और वर्ग संघर्श के साथ इनके सम्बन्ध का वि"लेशण करने का प्रयास किया है। किसान विद्रोह एक वि"ोश समय पर एक वि"ोश वर्ग की क्रान्तिकारी क्षमता बड़े पैमाने पर समाज में भाक्ति एकत्रीकरण और वर्ग गठबंधन पर टिकी होती है। कृशि में उत्पादन के साधनों में परिवर्तन ने पारम्परिक कृशि सम्बन्धों में बाधा उत्पन्न की थी, जिसके कारण किसान अ"ांति हुई। ब्रिटी"ा भाासन के समय भूमि एक बिक्री योग्य वस्तु बन गई और 19वीं सदी के अंत में व्यवसायिक कृशि का विकास हुआ।

भारत में कृशक आन्दोलन–

भारत में कृशक आन्दोलनों को मुख्यतः दो भागों में बाँटा जा सकता है– पहला वह आन्दोलन जो गरीब, छोटे और सीमांत कृशक से सम्बन्धित है, जिनका जीवन–यापन कृशि पर ही निर्भर है। दूसरा वह आन्दोलन जो सम्पन्न एवं धनी कृशकों का है यह वर्ग कृशि से प्राप्त अतिरिक्त भाग का व्यापार करते है।

समाज"ाास्त्रीय मानव समाज के अन्तर्गत किसानों को अधीनस्थ, सीमांत और दलित स्थिति के रुप में प्रस्तुत किया जाता है। समाज"ाास्त्रीय साहित्य में कृशकों को सांस्कृतिक रुप से अव्यवस्थित, अचिंतन"ाील, अपरिश्कृत रुप में वर्णित किया गया है। कृशक सामाजिक और आर्थिक रुप से सीमांत (अधिकार हीन), सांस्कृतिक रुप से अधीन और राजनीतिक रुप से अ"ाक्त सामाजिक समूह है जो जीवन निर्वाह करने के लिए भूमि से जुड़े होते है।

भारतीय कृशक वर्ग की दरिद्रीकरण के कारण निम्नलिखित है–

1– औपनिवे"िाक भाासन की आर्थिक नीतियाँ (जमींदारी, रैय्यतवाड़ी, महलवाड़ी)

2– हस्त"िाल्प की समाप्ति

3– भूमि की अति संकुलता

4– नयी भूमि–राजस्व व्यवस्था

5– प्र"ाासन और न्याय व्यवस्था

भारत में कृशक आन्दोलन को उग्र एवं सुधारवादी स्वरुपों में देखा जा सकता है जो विचारधारा, संयोजन, लामबंदी पर निर्भर होते है। उग्र आन्दोलन जनलामबंदी का उपयोग करते है और एक विचारधारा द्वारा निर्दे"िात होते है, किन्तु ये आन्दोलन अल्पकालिक होते हुए बड़े भौगोलिक क्षेत्र में फैल सकते है। दूसरी ओर सुधारवादी कृशक आन्दोलन संस्थात्मक जनलामबंदी का उपयोग करते है, जो एक लम्बे जीवनकाल तक प्रद"ीन करते है। इसका महत्वपूर्ण उदाहरण के रुप अभी हाल ही में समाप्त हुए किसान आन्दोलन को लिया जा सकता हैं जो संसद द्वारा पारित किसान सुधार बिल के विरोध में भाुरू हुआ और 383 दिन तक अनवरत धरने एवं प्रद"ीन के रुप में चला। उत्तर भारत के किसानों ने काफी लम्बे समय के बाद राजधानी दिल्ली को अपने विरोध का गढ़ बनाया है। दिल्ली में जो देखने को मिला वो 32 साल पहले दिखा था। जब किसान नेता महेन्द्र सिंह टिकैत लाखों किसानों के साथ धरने पर बैठ गए थे। माँग थी कि गन्ने की फसल के दाम ज्यादा

मिलें और बिजली पानी के बिलों में छूट मिलें, जो पूरी भी हुई। भारत में किसान आन्दोलन का इतिहास पुराना है पिछले सौ वर्शों में कई विरोध–प्रद”िन हुए है।

हाल के कृशि कानून के बारे में किसानों का मानना है कि उन्हें जो चाहिए था वो नए कानून में नहीं है। किसान की माँग रही है कि उसे ज्यादा मंडियाँ चाहिए, लेकिन नए कानून के बाद ये सिलसिला ही खत्म हो सकता है।

भारत में कृशक आन्दोलन के चरण

प्रारम्भिक चरण(1857–1921)– नेतृत्व का अभाव विद्यमान। कुछ महत्वपूर्ण आन्दोलन हुए जैसे 1855 संथाल विद्रोह, मराठा विद्रोह, चम्पारण, मालाबार, मोपला विद्रोह(1921)

द्वितीय चरण(1921–1947)– स्वामी सहजानन्द सरस्वती के नेतृत्व में किसान सभा आन्दोलन 1929। अखिल भारतीय किसान सभा(1936) का निर्माण लखनऊ में हुआ। 1944–45 तक सीपीआई का किसान सभा के ऊपर पूर्ण नियन्त्रण हो गया।(धनागरे 1980) बंगाल का तेभागा आन्दोलन और आन्ध्र प्रदे”ा का तेलंगाना आन्दोलन इसी समय हुए।

स्वतन्त्रता प”चात चरण– भारत में पूँजीवादी खेती को बढ़ावा देने के लिए भूमि सुधार और सामुदायिक कार्यक्रमों ने केवल कृशि परे”ाानियों को तीव्र किया है। सरकार किसानों के बड़े हिस्से अर्थात कृशि सर्वहारा को राहत देने में असफल रही। सरकार की कृशि नीति ने किसानों के दु:ख को बढ़ाया ही है। इसी कारण आजादी के बाद भी कृशि समाज में असंतोश व्याप्त है। दक्षिण भारत में किसान आन्दोलनों को किरायेदार आन्दोलन के रुप में जाना जाता है। 1960 के द”ाक में चौधरी चरण सिंह उत्तरी भारत के गंगा क्षेत्र में किसानों के मसीहा के रुप में उभरे। चरण सिंह ने विकास की नेहरुवादी और गाँधीवादी रणनीति का पक्ष लिया।

आन्दालन के कारण–

1– किसान अत्याचार,

2– उच्च लगान,

3– अवैध करारोपण,

4– अवैतनिक श्रम,

5– कृशि उद्योगों को नुकसान,

6– प्रतिकूल नीतियाँ,

7– मनमानी बेदखली

आन्दोलन का महत्व :–

- भारतीयों में जागरुकता
- अन्य विद्रोहों को प्रेरित करना
- किसानों के बीच एकता
- किसानों की माँग एवं आवाज को सुना जाना
- राश्ट्रवाद का विकास
- कृशि सुधार के लिए प्रोत्साहित करना

कृशक आन्दोलनों के इतिहास का पता ब्रिटि"ाों की आर्थिक नीतियों से देखा जा सकता है जो कृशि व्यवस्था में बहुत से परिवर्तन लेकर आयी है। ब्रिटि"ा औपनिवे"िाक विस्तार के परिणामों को सबसे ज्यादा भारतीय कृशक वर्ग ने महसूस किया और समय–समय पर यह विद्रोह के रुप में उभरा। ब्रिटि"ा भाासन की नीतियों ने पारम्परिक कृशक सम्बन्धों को उलट–पलट करके रख दिया और कृशक अ"ाान्ति को पैदा किया।

भूमि एक बिक्री योग्य वस्तु बन गयी और 19वीं सदी के बाद व्यवसायिक कृशि का विकास हुआ। कृशक आन्दोलनों ने स्वतन्त्रता प"चात कृशि सुधारों के लिए वातावरण उत्पन्न कर दिया जैसे जमींदारी प्रथा का अंत। 1960 के द"ाक से कृशि उत्पादन तेजी से बाजार उन्मुख हो गये। इस प्रक्रिया में न केवल ग्रामीण भाहरी विभाजन धुंधला हुआ बल्कि कृशक समाज की संरचना में भी काफी बदलाव हुआ। समकालीन भारत में कृशि श्रमिक एक ही मालिक से जुडा हुआ नहीं है जैसा आजादी के पहले था। कृशि श्रमिकों के सर्वहाराकरण के कारण वे दिहाड़ी मजदूरी पर अधिक निर्भर है। मालिकों के साथ आर्थिक सम्बन्ध खत्म हो रहे है।

हरित क्रान्ति के बाद बाजार अर्थव्यवस्था और वै"वीकरण ने कृशक संरचना में परिवर्तन लाने का महत्वपूर्ण योगदान किया। किसानों के नए संगठनों का निर्माण हुआ जो राजनीतिक ताकत और प्रभाव भी रखते है। यह संगठन उत्पाद की लाभकारी कीमत, कृशि निवे"ा की कीमत, बिजली कर, सिंचाई कर आदि में रियायत या अनुदान की माँग करते है।(ओमवेट 1993) कृशक आन्दोलन विकास प्रतिमान में औद्योगिक विकास से कृशि विकास तक बदलाव पर जोर देते है। अमीर किसानों ने अपनी कृशि बचत को उद्योगों और भाहरी क्षेत्रों में निवे"ा करना प्रारम्भ कर दिया है। भारत में आर्थिक सुधारों के बाद की अवधि में विकास परियोजनाओं के लिए खेती योग्य उपजाऊ भूमि के अधिग्रहण के खिलाफ बहुत से कृशक विरोधों और आन्दोलनों को देखा है जैसे– 2006 में प"िचम बंगाल के सिंगुर और नंदीग्राम में आन्दोलन। 2010 में आन्ध्र प्रदे"ा में सोमयेटा। इन आन्दोलनों के समर्थक गैर–सरकारी संगठन थे, साथ ही उन्नत संचार प्रौद्योगिकी के कारण व्यापक प्रचार हुआ।

भारत सरकार की ने"ानल कमी"ान ऑफ फारमर्स के पूर्व सदस्य वाई. एस. नंदा का मानना है कि कृशि क्षेत्र में प्रयोग ज्यादा और असल काम कम हुए हैं। 80 और 90 के द"ाक में कृशि ग्रोथ अच्छी थी। छठे पंचवर्शीय योजना में कृशि की ग्रोथ 5.7 थी और जीडीपी ग्रोथ 5.3 प्रति"ात थी। ऐसा दोबारा नहीं हुआ। 90 के द"ाक के बाद तो ग्रोथ कम ही रही है। हरित क्रान्ति का फल दो द"ाकों तक दिखा उसके बाद नहीं।

हरित क्रान्ति के जनक प्रो. स्वामीनाथन की अध्यक्षता में बनी समिति ने 2006 में निम्न सुझाव दिए:–

1– फसल उत्पादन कीमत से 50 प्रति"ात ज्यादा दाम किसानों को मिलें

2– कम दामों में अच्छे बीज मुहैया कराए जाए

3– गाँवों में ज्ञान चौपाल बनाया जाय

4– महिला किसानों को किसान क्रेडिट कार्ड मिलें

5– प्राकृतिक आपदाओं की स्थिति में मदद मिलें

6– इस्तेमाल नहीं हो रही जमीन के टुकड़ों का वितरण किया जाय

7– कर्ज की ब्याज दर 4 प्रति"ात की जाय

किसानों के हित के लिए एमएसपी की व्यवस्था सालों से चल रही है। सरकार फसलों की एक न्यूनतम कीमत तय करती है जो किसानों को नुकसान से बचाने में सहयोग करती है। 60 के द"ाक में सरकार ने अन्न की कमी से बचाने के लिए सबसे पहले गेंहू पर एमएसपी भाुरु की। हर फसल पर सरकार एमएसपी नहीं देती है, सिर्फ 23 फसलें (7 अनाज, 5 दालें, 7 ऑयलीड, 4 अन्य– गन्ना, कपास, जूट, नारियल) ही है जिन पर एमएसपी तय होता है। अगस्त 2014 में बनी भाांता कुमार कमेटी के अनुसार 6 प्रति"ात किसानों को ही एमएसपी का लाभ मिल पाया ह।

निश्कर्श :–

डी. एन. धनागरे अपने अध्ययन में पाते है कि भारत में किसान आन्दोलन कभी भी आधार स्तर पर संगठित नहीं रहे है, जिसके कारण ये सरकार पर अपनी माँगों के पक्ष में संगठित दबाव बना पाने में पूरी तरह सफल नहीं हो पाते हैं। दूसरी कमी इनमें सभी जातोय समूहों की सहभागिता का अभाव रहा है। साथ ही इन आन्दोलनों का राजनीतिकरण भी इसकी प्रभाविकता में कमी करती है। दे"ा की सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था में किसान एक ऐसे उत्पादक है जो अपने माल के भाव कभी तय नहीं कर पाता वो भाव स्वीकार करता है दूसरों का तय किया हुआ।

सन्दर्भ सूची :–

1– धनागरे, डी. एन. 1983 पीजेंट मूवमेंटस इन इण्डिया, 1920–1950 ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस नई दिल्ली

2– मुखर्जी, पी. एन. 1971 फ्राम एक्स्ट्रीमिस्म टू द इलेक्ट्रोरल पोलिटिक्स, नक्सलाइट पार्टीसिपे"ान इन इलेक्"ान, मनोहर प्रेस नई दिल्ली

3– भार्मा, विरेन्द्र प्रका"ा 2016 ग्रामीण एवं नगरीय समाज"ाास्त्र, पंच"ील प्रका"ान, जयपुर

4– रावत, हरिकृश्ण 2014 उच्चतर समाज"ाास्त्र रावत प्रका"ान, जयपुर

5– देसाई, ए. आर. 2012 भारतीय ग्रामीण समाज"ाास्त्र, रावत पब्लिके"ान्स, जयपुर

6– आहूजा, राम 2013 भारतीय सामाजिक व्यवस्था, रावत पब्लिके"ान्स, जयपुर

7– आहूजा, राम 2012 भारतीय समाज, रावत पब्लिके"ान्स, जयपुर

8– भााह, घन"याम, अनुवादक हरिकृश्ण रावत 2009, भारत में सामाजिक आन्दोलन सम्बन्धित साहित्य की एक समीक्षा, सेज, रावत पब्लिके"ान्स, जयपुर

9– गुप्ता, एम. एल. और डी. डी. भार्मा, 2005, साहित्य भवन पब्लिके"ान्स, आगरा

10– बीबीसी हिन्दी समाचार